हफ़्तावार रिसाला : 383
Weekly Booklet : 383

Neki Ki Dawat Se 52 Madani Phool

“नेकी की दा’वत” से 52 मदनी फूल

सफ़हात 16

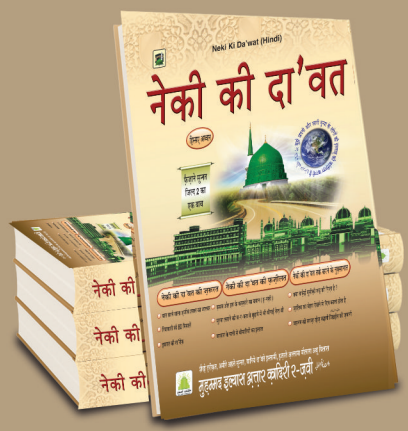

रोज़ी में बरकत का वज़ीफ़ा 04
ऐब छुपाइये, जन्नत में जाइये 07
माल ज़ियादा हिसाब ज़ियादा 09
मां बाप के ना फ़रमान का अन्जाम 10

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُستَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **''नेकी की दा'वत'' से 52 मदनी फूल''**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

"नेकी की दा'वत" से 52 मदनी फूल[1]

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 15 सफ़्हात का रिसाला : **"नेकी की दा'वत" से 52 मदनी फूल** पढ़ या सुन ले उसे ख़ूब नेकियां करने और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उस की मां बाप और ख़ान्दान समेत बे हिसाब बख़्शिश फ़रमा । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "**बेशक अल्लाह** पाक ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है, क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है, कहता है : फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा है ।"

(مجمع الزوائد، 10/251، حدیث:17291)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿1﴾ इल्मे दीन सीखने और सिखाने की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन

1... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "नेकी की दा'वत" से चन्द अह़ादीसे मुबारका और फ़रामीने बुज़ुर्गाने दीन का मजमूआ़ ।

को किसी क़िस्म की वहशत न हो।"

(حلیۃ الاولیاء، 6/5، رقم:7622) (नेकी की दा'वत, स. 341)

﴾2﴿ नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने की फ़ज़ीलत

बारगाहे ख़ुदा वन्दी में एक बार ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके। उस की जज़ा क्या है? **अल्लाह पाक** ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर कलिमे के बदले एक एक साल की इ़बादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।

(مکاشفۃ القلوب، ص48) (नेकी की दा'वत, स. 231)

﴾3﴿ मस्जिद आबाद करने के फ़ज़ाइल पर 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ बेशक **अल्लाह** पाक के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं।

(معجم اوسط، 2/58، حدیث:2502) (नेकी की दा'वत, स. 28)

﴾2﴿ जो मस्जिद से **मह़ब्बत** करता है **अल्लाह** पाक उसे अपना मह़बूब बना लेता है। (معجم اوسط، 4/400، حدیث:6383) (नेकी की दा'वत, स. 28)

﴾3﴿ जब कोई बन्दा ज़िक्र या नमाज़ के लिये **मस्जिद** को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** पाक उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है जैसा कि जब कोई ग़ाइब आता है तो उस के घर वाले उस से ख़ुश होते हैं।

(ابن ماجہ، 1/438، حدیث:800) (नेकी की दा'वत, स. 28)

﴾4﴿ पांच से मह़ब्बत और पांच को भूलना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मेरी उम्मत पर वोह ज़माना जल्द आएगा कि वोह पांच से मह़ब्बत रखेंगे और पांच को भूल जाएंगे : ﴾1﴿ दुन्या से

महब्बत रखेंगे और आख़िरत को भूल जाएंगे ﴿2﴾ माल से **महब्बत** रखेंगे और मुहासबे को भूल जाएंगे ﴿3﴾ मख़्लूक़ से **महब्बत** रखेंगे और ख़ालिक़ को भूल जाएंगे ﴿4﴾ गुनाहों से **महब्बत** रखेंगे और तौबा को भूल जाएंगे ﴿5﴾ महल्लात से **महब्बत** रखेंगे और क़ब्रिस्तान को भूल जाएंगे।

(مکاشفۃ القلوب، ص34) (नेकी की दा'वत, स. 60)

﴿5﴾ रियाकारी व दिखावे की नुहूसत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "**अल्लाह** पाक उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में राई के दाने के बराबर भी **रिया** (या'नी दिखावा) हो।" (الترغیب والترہیب، 1/36، حدیث:27) (नेकी की दा'वत, स. 65)

﴿6﴾ बातिन की इस्लाह़ कीजिये

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जो अपने बातिन की इस्लाह़ करेगा तो **अल्लाह** पाक उस के ज़ाहिर की (भी) इस्लाह़ फ़रमा देगा।"

(جامع صغیر، ص508، حدیث:8339) (नेकी की दा'वत, स. 83)

﴿7﴾ ना पसन्दीदा कामों से बचो

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो काम लोगों के सामने करना ना पसन्द करते हो वोह तन्हाई में भी न किया करो।"

(جامع صغیر، ص487، حدیث:7973) (नेकी की दा'वत, स. 95)

﴿8﴾ झगड़ा न कीजिये

अल्लाह पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं। (ابوداؤد، 4/332، حدیث:4800) (नेकी की दा'वत, स. 129)

﴾9﴿ सब से अच्छा कौन ?

"बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ किया गया : लोगों में सब से अच्छा कौन है ?" फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से क़ुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेह्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो।

(مسند امام احمد، 10/402، حدیث:27504) (नेकी की दा'वत, स. 151)

﴾10﴿ तिलावते क़ुरआने करीम की फ़ज़ीलत

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन क़ुरआन पढ़ने वाला आएगा तो क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा : **या रब !** इसे हुल्ला (या'नी जन्नत का लिबास) पहना। तो उसे करामत का हुल्ला (या'नी बुज़ुर्गी का जन्नती लिबास) पहनाया जाएगा, फिर क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा : "**या रब !** इस में इज़ाफ़ा फ़रमा," तो उसे करामत का ताज पहनाया जाएगा, फिर क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा : "**या रब !** इस से राज़ी हो जा।" तो **अल्लाह** पाक उस से राज़ी हो जाएगा। फिर इस क़ुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा : क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत के दरजात तै़ करता जा और हर आयत पर उसे एक ने'मत अ़ता की जाएगी।

(ترمذی، 4/419، حدیث:2924) (नेकी की दा'वत, स. 152)

﴾11﴿ रोज़ी में बरकत का वज़ीफ़ा

अल्लाह पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दिया जाए तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करे और अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह्मी किया करे। (الترغیب والترہیب، 3/217، حدیث:16) (नेकी की दा'वत, स. 152)

﴾12﴿ अच्छी सोच की बरकत

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ" या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इबादत से है।

(ابوداؤد، 4/388، حدیث:4993)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक इबादत है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/621) (नेकी की दा'वत, स. 159)

﴾13﴿ जन्नती महल ह़ासिल करने का त़रीक़ा

अल्लाह पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो उसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो उस से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नाता (या'नी तअ़ल्लुक़) जोड़े।

(المستدرک للحاکم، 3/12، حدیث:3215) (नेकी की दा'वत, स. 159)

﴾14﴿ कारोबार में झूटी क़सम का नुक़्सान

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "झूटी क़सम से सौदा फ़रोख़्त हो जाता है और बरकत मिट जाती है।" (کنز العمال، 16/297، حدیث:46376) एक और जगह फ़रमाया : "क़सम सामान बिकवाने वाली है और बरकत मिटाने वाली है।"

(بخاری، 2/15، حدیث:2087) (नेकी की दा'वत, स. 169)

﴾15﴿ दौराने तिलावत रोने की फ़ज़ीलत

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुए रोओ और अगर रो न सको तो रोने की सी शक्ल बनाओ। (ابن ماجہ، 2/129، حدیث:1337) (नेकी की दा'वत, स. 201)

﴾16﴿ दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह करने वाले की शान

अल्लाह पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सफ़र के दौरान **अल्लाह** पाक की त़रफ़ तवज्जोह रखे और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे, उस के लिये एक फ़िरिश्ता मुह़ाफ़िज़ (या'नी ह़िफ़ाज़त करने वाला) मुक़र्रर हो जाता है और जो (बेहूदा) शे'रो शाइ़री (या फ़ुज़ूल बातों) में मसरूफ़ रहे तो उस के पीछे एक शैत़ान लग जाता है।

(معجم کبیر، 17/324، حدیث:895) (नेकी की दा'वत, स. 243)

﴾17﴿ मुस्कुरा कर मिलने की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने (दीनी) भाई से मुस्कुरा कर मिलना तुम्हारे लिये सदक़ा है और नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना सदक़ा है।" (ترمذی، 3/384، حدیث:1963) (नेकी की दा'वत, स. 245)

﴾18﴿ क़ह्क़हा न लगाइये

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللهِ" या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से है।" (معجم صغیر، 2/104، حدیث:1053) (नेकी की दा'वत, स. 248)

﴾19﴿ नजात के त़रीक़े

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ? फ़रमाया : ﴾1﴿ **अपनी ज़बान** को रोक

रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक़्सान न हो) और ﴾2﴿ तुम्हारा **घर** तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और ﴾3﴿ **गुनाहों** पर **रोना** इख़्तियार करो।

(ترمذی، 4/182، حدیث:2414) (नेकी की दा'वत, स. 277)

﴾20﴿ मुसल्मान का ऐ़ब छुपाने का सवाब

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने मुस्लमान भाई की ऐ़ब पोशी करे **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस की ऐ़ब पोशी फ़रमाएगा और जो अपने मुसल्मान भाई का ऐ़ब ज़ाहिर करे **अल्लाह** पाक उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमाएगा यहां तक कि उसे उस के घर में रुस्वा कर देगा। (ابن ماجہ، 3/219، حدیث:2546) (नेकी की दा'वत, स. 398)

﴾21﴿ मुसल्मान भाई की तक्लीफ़ दूर करने का सवाब

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे **अल्लाह** पाक क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की **ऐ़ब पोशी** करे तो ख़ुदाए सत्तार क़ियामत के रोज़ उस की ऐ़ब पोशी फ़रमाएगा।

(مسلم، ص1069، حدیث:6578) (नेकी की दा'वत, स. 398)

﴾22﴿ ऐ़ब छुपाइये जन्नत में जाइये

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स अपने भाई का ऐ़ब देख कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

(مسند عبد بن حمید، ص279، حدیث:885) (नेकी की दा'वत, स. 398)

﴾23﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मोमिन की आंखों से **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से आंसू निकलते हैं अगर्चे मख्खी के सर के बराबर हों, फिर वोह आंसू उस के चेहरे के ज़ाहिरी हिस्से को पहुंचें तो **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम पर हराम कर देता है।

(شعب الایمان، 1/490، حدیث:802) (नेकी की दा'वत, स. 273)

﴾24﴿ फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जहां भी रहो **अल्लाह** पाक से डरते रहो और गुनाह के बा'द नेकी कर लिया करो कि वोह नेकी उस गुनाह को मिटा देगी और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आओ।

(ترمذی، 3/397، حدیث:1994) (नेकी की दा'वत, स. 476)

﴾25﴿ दीनदार औरत से निकाह़ की तरग़ीब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : औरत से **निकाह़** चार बातों की वजह से किया जाता है (या'नी निकाह़ में इन का लिह़ाज़ होता है) : ﴾1﴿ माल ﴾2﴿ ह़सब ﴾3﴿ जमाल ﴾4﴿ दीन। और तू दीन वाली को तरजीह़ दे।

(بخاری، 3/429، حدیث:5090) (नेकी की दा'वत, स. 512)

﴾26﴿ अपने मरहूमीन को ईसाले सवाब करें

मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** पाक क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये

"दुआए मग़्फ़िरत करना" है।

(شعب الایمان، 6/203، حدیث:7905) (नेकी की दा'वत, स. 583)

﴾27﴿ निकाह़ की बरकत

जब तुम में कोई **निकाह़** करता है तो शैत़ान कहता है : हाए अफ़्सोस ! इब्ने आदम ने मुझ से अपना दो तिहाई (2/3) दीन बचा लिया।

(الفردوس بماثور الخطاب، 1/309، حدیث:1222) (नेकी की दा'वत, स. 512)

﴾28﴿ गुनाह से मन्अ़ न करने का नुक़्सान

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते रहो और गुनाहों से मन्अ़ करते रहो और ज़ालिम को जुल्म से रोकते रहो और उस को ह़क़ बात की त़रफ़ खींच कर लाते रहो, वरना **अल्लाह** पाक तुम्हारे दिल भी ख़ल्त़ (या'नी ना फ़रमानों की नुहूसत से उन्हीं जैसे) कर देगा और तुम पर भी ला'नत फ़रमाएगा, जैसे उन पर ला'नत फ़रमाई।

(ابوداؤد، 4/162، حدیث:4336، 4337) (नेकी की दा'वत, स. 534)

﴾29﴿ वुज़ू के बा'द सूरए क़द्र पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़दीसे मुबारका में है : जो वुज़ू के बा'द एक मर्तबा सूरए क़द्र पढ़े तो वोह सिद्दीक़ीन में से है और जो दो मर्तबा पढ़े तो शुहदा में शुमार किया जाए और जो तीन मर्तबा पढ़ेगा तो **अल्लाह** पाक मैदाने महशर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा। (جمع الجوامع، 7/251، حدیث:22817) (नेकी की दा'वत, स. 391)

﴾30﴿ माल ज़ियादा ह़िसाब ज़ियादा

फ़रमाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه : जितना माल ज़ियादा होगा उतना ह़िसाब ज़ियादा होगा।

(البدور السافرة فی امور الآخرة، ص264) (नेकी की दा'वत, स. 351)

﴾31﴿ लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाना

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन से उल्फ़त की जाती है और उस में कोई भलाई नहीं जो न किसी से उल्फ़त रखे न उस से उल्फ़त की जाए और लोगों में से बेहतर वोह है जो लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाए।

(شعب الایمان، 6/117، حدیث:7658) (नेकी की दा'वत, स. 299)

﴾32﴿ अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो नेकी की दा'वत दीजिये

मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! भलाई का हुक्म दो, बुराई से मन्अ़ करो तुम्हारी ज़िन्दगी ब ख़ैर गुज़रेगी। (तफ़्सीरे कबीर, 3/316) (नेकी की दा'वत, स. 31)

﴾33﴿ अच्छाई और बुराई में फ़र्क कीजिये

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : जो दिल अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई न समझे तो उस (दिल) के ऊपर वाले ह़िस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थैले को उलटा किया जाता है और फिर थैले के अन्दर की चीज़ें बिखर जाती हैं।

(مصنّف ابن ابی شیبہ، 8/667، حدیث:124، 125) (नेकी की दा'वत, स. 31)

﴾34﴿ अल्लाह पाक की बारगाह में रोते हुए ह़ाज़िरी

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "जब तुम में से किसी को ख़ौफ़े ख़ुदा से **रोना** आए तो वोह आंसूओं को कपड़े से साफ़ न करे बल्कि रुख़्सारों पर बह जाने दे कि वोह इसी ह़ालत में **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़ाज़िर होगा।"

(شعب الایمان، 1/493، حدیث:808) (नेकी की दा'वत, स. 282)

﴾35﴿ एक हज़ार सोने के सिक्के सदक़ा करने से बेहतर

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से आंसू का एक क़त़रा बहना मेरे नज़्दीक एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से बेहतर है।"

(شعب الایمان، 1/502، حدیث:842) (नेकी की दा'वत, स. 284)

﴾36﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा में बहने वाले आंसूओं की बरकत

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग, ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ जब रोते तो अपने चेहरे और दाढ़ी पर आंसू मल लेते और फ़रमाते कि मुझे मा'लूम हुवा है कि आग उस जगह को न छूएगी जहां ख़ौफ़े ख़ुदा से निकलने वाले आंसू लगे हों। (احیاء العلوم، 4/201) (नेकी की दा'वत, स. 283)

﴾37﴿ बद गुमानी न करो

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग, ह़ज़रते मक्ह़ूल दिमश्क़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जब किसी को रोता हुवा देखो तो तुम भी रो पड़ो और उसे रियाकार न समझो, मैं ने एक दफ़्आ़ किसी रोने वाले शख़्स को "रियाकार" तसव्वुर किया तो मैं एक साल तक रोने से मह़रूम रहा।

(تنبیہ المغترین، ص107) (नेकी की दा'वत, स. 163)

﴾38﴿ चोरी और शराब नोशी वग़ैरा का अ़ज़ाब

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग, ह़ज़रते मसरूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से रिवायत है : जो शख़्स चोरी या शराब ख़ोरी या ज़िना में मुब्तला हो कर मरता है उस पर दो सांप मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं।

(موسوعہ امام ابن ابی الدنیا، 5/476، حدیث:257) (नेकी की दा'वत, स. 57)

﴾39﴿ शैत़ान से बचने की जगह

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम से बयान किया जाता था कि "اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِیْنٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ" या'नी मस्जिद शैत़ान से बचने के लिये एक मज़्बूत़ क़ल्आ़ है।

(مصنّف ابن ابی شیبہ، 8/172) (नेकी की दा'वत, स. 28)

﴾40﴿ मौत की तक्लीफ़

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : मौत दुन्या व आख़िरत की हौलनाकियों में सब से ज़ाइद हौलनाक है, येह आरों के चीरने से, क़ैंचियों के काटने से, हांडियों के उबालने से ज़ाइद है। अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर शदाइदे मौत (या'नी मौत की सख़्तियां) लोगों को बता देता तो उन का ऐ़श और नींद सब कुछ ख़त्म हो जाता।

(شرح الصدور، ص33) (नेकी की दा'वत, स. 349)

﴾41﴿ तिल्ली की बीमारी से ह़िफाज़त का नुस्ख़ा

इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो शख़्स हमेशा जूता पहनते वक़्त सीधे पांव से और उतारते वक़्त उलटे पांव से पहल करे वोह तिल्ली की बीमारी से महफ़ूज़ रहेगा। (حیاۃ الحیوان، 2/289) (नेकी की दा'वत, स. 123)

﴾42﴿ ह़राम देखने का अ़ज़ाब

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी।

(مکاشفۃ القلوب، ص10) (नेकी की दा'वत, स. 315)

﴾43﴿ दुन्यावी लज़्ज़तों से फ़ाएदा उठाने का नुक़्सान

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होना गुनाह नहीं है, लेकिन इस से सुवाल ज़रूर होगा और जिस से हिसाब में पूछगछ हुई वोह हलाक हो जाएगा और जो आदमी दुन्या में मुबाह चीज़ों को इस्ति'माल करता है अगर्चे इसे क़ियामत में इस पर अ़ज़ाब नहीं होगा लेकिन इसी मिक्दार में आख़िरत की ने'मतें कम हो जाएंगी, ग़ौर तो कीजिये ! कितने बड़े नुक़्सान की बात है कि इन्सान फ़ानी ने'मतों के हुसूल में बहुत जल्दी करे और इस के बदले उख़रवी ने'मतों में कमी के ज़रीए नुक़्सान उठाए।"

(إحياء العلوم، 5/98) (नेकी की दा'वत, स. 117)

﴾44﴿ सब मुसल्मान नेकी की दा'वत दें

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : सारे मुसल्मान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज़ है कि लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें। (तफ़्सीरे नईमी, 4/72) (नेकी की दा'वत, स. 30)

﴾45﴿ सिर्फ़ ख़ुदा से डरें

"**हिल्यतुल औलिया**" में रिवायत है : "जब बन्दा क़ब्र में दाख़िल होता है तो उस को डराने के लिये वोह तमाम चीज़ें आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और **अल्लाह** पाक से न डरता था।"

(حلية الاولياء، 10/12، رقم: 14318) (नेकी की दा'वत, स. 58)

﴾46﴿ मां बाप के ना फ़रमान का अन्जाम

मन्क़ूल है : जब मां बाप के ना फ़रमान को दफ़्न किया जाता है तो **क़ब्र** उसे दबाती है यहां तक कि उस की पस्लियां (टूट फूट कर) एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। (الزواجر عن اقتراف الكبائر، 2/140) (नेकी की दा'वत, स. 440)

﴾47﴿ अल्लाह पाक की ने'मत

ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो फ़क़त खाने पीने और लिबास ही को **अल्लाह** पाक की ने'मत समझे तो यक़ीनन उस का इ़ल्म कम है। (اَلزّھد لابن المبارک، ص134، رقم:397) (नेकी की दा'वत, स. 440)

﴾48﴿ बसरा की हर गली से तिलावत की आवाज़ आती थी

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : किसी ज़माने में बसरे की हर गली से ज़िक्रे इलाही और तिलावते क़ुरआने करीम की आवाज़ें बुलन्द होती थीं और इस त़रह़ लोगों को ज़िक्रो अज़्कार की रग़बत मिलती थी। (کیمیائے سعادت، 2/692) (नेकी की दा'वत, स. 97)

﴾49﴿ जो होना है हो कर रहेगा।"

हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी सख़्त चट्टान में कोई अ़मल करे जिस का न तो कोई दरवाज़ा हो और न ही **रोशन दान**, तब भी उस का अ़मल ज़ाहिर हो जाएगा और जो होना है हो कर रहेगा।"

(مسند امام احمد، 4/57، حدیث:11230) (नेकी की दा'वत, स. 90)

﴾50﴿ अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है

अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **अल्लाह** वालों की नक़्क़ाली में यक़ीनन बरकत ही बरकत है और क्यूं न हो कि काएनात के तमाम **अल्लाह** वालों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُمْ या'नी बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।

(معجم اوسط، 6/342، حدیث:8991) (नेकी की दा'वत, स. 122)

﴾51﴿ इस नामए आ'माल को फेंक दो

ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रिवायत में आया है, जब फ़िरिश्ते बन्दों के आ'माल नामों को आस्मानों पर ले कर जाते और दरबारे इलाही में पेश करते हैं तो **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : اَلْقِ تِلْكَ الصَّحِيْفَةَ اَلْقِ تِلْكَ الصَّحِيْفَةَ या'नी "इस नामए आ'माल को फेंक दो, इस नामए आ'माल को फेंक दो।" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : **या अल्लाह !** तेरे इस बन्दे ने जो नेक आ'माल किये हैं उन को हम ने देख कर और सुन कर लिखा है। **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है कि لَمْ يُرِدْ وَجْهِيْ या'नी "इस बन्दे ने इन आ'माल में मेरी रिज़ा की निय्यत नहीं की थी।"

(اشعۃ اللمعات، 1/39) (नेकी की दा'वत, स. 110)

﴾52﴿ जहन्नम में ले जाने का हुक्म होगा

मन्क़ूल है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को **अल्लाह** पाक की बारगाह में खड़ा किया जाएगा, **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम में ले जाने का हुक्म फ़रमाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : **या अल्लाह** पाक ! मुझे किस लिये जहन्नम में भेजा जा रहा है ? इर्शाद होगा : नमाज़ों को उन का वक़्त गुज़ार कर पढ़ने और मेरे नाम की झूटी क़समें खाने की वजह से।

(مکاشفۃ القلوب، ص189) (नेकी की दा'वत, स. 169)

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025